SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

लोक साहित्य में जीवन दर्शन

श्रीमती वंदना शुक्ला
शोधार्थी (हिन्दी)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोधसार

लोक साहित्य को लोकजीवन के द्वारा समझा जा सकता है। सामाजिक जीवन की जानकारी को समझने के लिए आवश्यक है कि समाज के जीवन दर्शन समझा जाये समाज के मुख्य तत्वों के आधार पर इनकी व्याख्या की जाती है इनमें सामाजिक न्याय, बंधुत्व एवं सामानता जैसे मूल्यों का महत्व होता है। लोक साहित्य में संस्कृति की पहचान होती है इसमें मानवीय मूल्यों के आदर्शों को संरक्षित किया जाता है लोक साहित्य में आध्यात्मिक विश्वासों और जीवन के अर्थ पर भी विचार किया जाता है लोक साहित्य आने वाली पीढ़ी को विरासत में दिया जाता है। आध्यात्मिक साहित्य में प्रकृति को पवित्र सामान्य एवं शक्ति के रूप में बताया गया है।

बीज शब्द

सामाजिक जीवन, लोक साहित्य, तत्व, मूल्य कलाओ।

भूमिका

लोक साहित्य को ही संस्कृति की अभिन्न अंग के रूप में जाना जाता है लोक संस्कृति के सभी अंगों की झलक लोक संस्कृति में दिखती है किसी भी समाज की रीति रिवाज अंधविश्वास मान्यताएं कहावतें त्यौहार मुहावरे परंपरा आदि लोक साहित्य में ही समाए रहती हैं। संस्कृति उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानव जीवन, इसलिए लोक साहित्य में मानव जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक प्रकृति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक समय इसमें समाहित होता है इसमें परंपरा का प्रवाह जीवित रहता है, साधारण मानव वर्ग से संबंधित तत्वों को लोक साहित्य कहना चाहिए साधारण जनजीवन एवं विशिष्ट जीवन में अंतर होता है। लोग शब्द की उत्पत्ति वेद के साथ

मानी जाती है जिन विषयों की जानकारी वेदों के द्वारा प्राप्त होती है वह वैदिक होती है किंतु कोई बात लोक में कहीं या सुनी जाती है वह लौकिक कहलाती है इस प्रकार सारी वैदिक, पौराणिक सारी कथाएं, और वह अलग जितनी भी कथाएं हैं वह सभी लौकिक कहलाएंगी। लोक साहित्य को रहना के आधार पर देखा जाए तो अंग्रेजी भाषा की फोकलिटरेचर का रूपांतरण है सामान्यतः उपयोग में पश्चात प्रणाली के लिए लोक संगीत, लोक वार्ता, आदि जैसे शब्द का अर्थ मुख्य धारा से हट कर या अंचलिए ग्रामीण क्षेत्रीय संस्कृति के लिए प्रयोग किया जाता है। लोक साहित्य की व्यापकता में भाषागत अभिव्यक्ति, समस्त प्रकार की बोलिया आती है। भाषागत बोली अभिव्यक्ति आदिम संस्कृति के अवशेष हैं वही मौखिक अभिव्यक्ति को श्रुति माना जाता है उसमें लोक मानस की रीति समाहित है। वैदिक काल से ही शब्द की उत्पत्ति हुई है ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से इस शब्द की जानकारी प्राप्त होती है वेद एवं लोक शब्दावली वैदिक काल से ही अपनी अलग स्थिति को स्पष्ट करती है पाणनी के द्वारा वेद एवं लोक शब्द की अलग-अलग व्याख्या की गई है वही भरत मुनि लोक शब्द को लोक धर्मी और नाट्य धर्मी की व्याख्या करते हैं। व्यास मुनि महाभारत की रचना कर, उल्लेख करते हैं कि प्रत्यक्ष रूप दर्शी ही संपूर्ण विश्व को हर तरह से देखने वाला होता है।

लोकनाट्य

मानव जीवन में लोकनाट्य का अपना अलग ही महत्वपूर्ण स्थान हैं आदिकाल से लेकर आदिमानव बनकर भ्रमण करते जब जाता होगा तब वह बंदरों भालू आदि जानवरों को नृत्य करा कर अपना मनोरंजन करता होगा संस्कृति की नट धातु से नाट्य शब्द की उत्पत्ति हुई है नात परंपरा की प्रमाणिकता स्पष्ट आठवीं शताब्दी में मिली सही प्रारंभ हुई है लोकनाट्य किसी सुव्यवस्थित मंच की आदि नहीं रही है वह मुक्त आकाश के नीचे अपने पैर पसारे हैं लोकनाट्य आवश्यकता अनुसार अपने अवसरों का निर्माण कर लेता है वह स्थाई मंच निर्मित करता है अनिवार्यता से वह स्वतंत्र होता है परंपरागत रूप से लोकनाट्य कलाओं में कठपुतली का नृत्य बहुरूपियों का नृत्य राजस्थान गुजराती आदि के प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं। आगे हिंदी साहित्य की भारतेंदु युग में लोकनाट्य कला का विस्तार किया गया लोकनाट्यों को रंग रंगमंच दिया गया।

उनका विस्तार शैलीगत प्रभाव ग्रहण किया गया, नाटक का आगे विस्तार किया और नोटंकी मे परिवर्तित हो गया। भारतेंदु का दृष्टिकोण नाट्य कला की ओर आकर्षित हुआ क्योंकि यह प्राचीन परंपराओं के कारण हास परिहास का बिंदु बन चुका था यह मनोरंजन के दायरे से बाहर आ ही नहीं पा रहा था उसमें उद्देश्य और कला दोनों का ही बहुत ज्यादा अभाव था आगे चलकर यह परंपरा टूटी और लोक नाटक को उद्देश्य पूर्ण कर उसे संदर्भों के साथ व्यवस्थित रूप में जोड़कर रंगमंच में प्रस्तुत किया गया। भारतेंदु युग में पौराणिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, रोमांटिक एवं राष्ट्रीय प्रधान नाटकों की रचना की गई इस रूप युग में उच्च स्तरीय नाटकों एवं अच्छे नाटकों को अंग्रेजी संस्कृत व बांग्ला भाषा में अनुवाद किया गया

लोक कथा

समाज लोक में प्रचलित वे कथाएं हैं, जो मनुष्य की प्रवृत्ति में परिवर्तन सुधार कर वर्तमान स्वरूप में होती हैं वे लोक कथाएं कहलाती हैं ध्यान आकर्षित करने वाली बात यह है कि कुछ रूढ़ियों और निश्चित शैलियों से बनी लोक कथाओं कई संस्करण उन कथाओं के नित्य नई प्रवृत्ति और चरित्र चित्रण को समाहित कर विकसित प्रमाणिकता को दर्शाती हैं। एक ही कथा को अनेक अंचलों और संदर्भों में बदलकर कई रूप समाहित करती हैं जिस तरह लोकगीत मानव मूल्य को परंपरागत रूप से वसीयत में प्राप्त होते हैं इस तरह लोक कथाएं भी वसीयत के रूप में परंपरागत ढंग से प्राप्त होती हैं दादी या नानी द्वारा जब बचपन में जो कहानी सुनाती थी वह लोक कथाएं चौपाल में किनके द्वारा, कहां, कब, कैसे और इनका किसने निर्माण किया है इसका अंदाजा लगाना संभव नहीं है लोक मानस में जहां एक और संस्कार है वही देवी-देवताओं की शक्ति में गहरी आस्था है लोक कथाओं के माध्यम से बताया जाता है कि जो होगा ठीक ही होगा। देवी पूजन के प्रसंग में बलि प्रथा का प्रचलन भी लोग कथाओ में हैं, विधि का विधान पूजा की सामग्री आदि लोक गाथाएं जीवित हैं।

"देवी चंडी के पूजन हित सब समान लियो मंगवाए।
पान फूल और अक्षत मेवा सोने थाल लिओं भरवाए।
ध्वजा नारियल और मिठाई फूलन हार करे तैयार।
नींबू खप्पर बकरा मैढ़ा लेके ज्वाला सिंह सरदार"।[01]

भारत के अनेक अंचलों में तीज त्योहार पर विभिन्न लोक गाथाएं प्रचलित है यह व्रत कथाएं ईश्वर के प्रति आस्था का प्रतीक है जो तिथियां त्योहार देवी देवताओं के प्रति आस्था और विश्वास को बनाए रखती हैं इन कथाओ का वैज्ञानिक मानसिकता के लोग सामान्य रूप से अनुसरण करते हैं।

नाग पंचमी के दिन नाग देवता का पूजन कर उत्सव मनाते है नाग देवता से रक्षा की कामना करते हुए दूध पिलाया जाता है अखाड़े में पहलवान कुश्ती लड़ते हैं ढोल नगाड़े से उत्सव का आनंद लिया जाता है।

"यह नाग पंचमी

झम्मक झूम।

यह ढोल ढ़माका ढ़म।

मल्लो की जब टोली निकली

यह चर्चा फैली गली-गली ल

यह पहलवान पटियाले का"।[2]

लोकगीत

लोकगीत ही लोक संगीत की आत्मा है लोकगीत बहुत ही प्राचीन हैं लोक संगीत के द्वारा ही शास्त्रीय संगीत का जन्म हुआ है जिस प्रकार आम जनता की भाषा से ही साहित्यिक भाषा का निर्माण होता है इस तरह लोकगीतों के द्वारा ही शास्त्रीय संगीत विकसित हुआ है लोक जीवन और संगीत के नैसर्गिक संबंध वास्तव है, जितना परिचय समाज को लोक संगीत के माध्यम से मिलता है उतना शास्त्रीय संगीत से नहीं।

"अंबर में तारे खिले थल मे खिले बबूल।

गौरी का जीवन न्नू खिले जैसे खिले कमल का फूल"।[3]

कहीं शृंगार रस तो कहीं वियोग का वर्णन लोकगीतों में मिलता है लोकगीत लोक से संबंधित समाज का दर्पण की भांति होते हैं कबीर ने अपने कुछ दोहो में वियोग का वर्णन कर जीवन के प्रति निराशा को दर्शाया है -

"माली आवत देखकर कलियन करें पुकार।

फूले फूले चुन लिए काल्ह हमारी बार।"[4]

इस सूक्ति में जीवन की प्रति निराशा एवं दयनीय का दृष्टिकोण को दिखाया गया है।

बुंदेली

बुंदेलखंड अपनी अलग ही पहचान बनाए हुए हैं इसकी भूभाग में मौर्य शुंग, वाकाटक, भार शिव, नाग आदि शासक अपना साम्राज्य विस्तार कर शासन कर चुके है इसमें बुंदेली गीत का अलग ही स्थान है।

"इत जमुना उत नर्मदा,

एक चंबल उत् टोंस,

छत्रसाल सो लरन की,

रही ना काहू हौन्सा"[5]

बुंदेलखंडी के भूभाग का विस्तार शासको की शक्ति के अनुसार विस्तृत एवं संकुचित होता रहा है बुंदेलखंडी बोली की बात की जाए तो यह है अधिक व्यवहार में आने वाली बोली है। इसमें अपनेपन एवं संस्कृति की पहचान झलकती है। यह सदियों से अपनी विशालता को समाहित किए हुए हैं।

लोक साहित्य की परंपराओं को विस्तृत और विकसित नहीं किया जाएगा तो उसका लोप हो जाएगा आधुनिकता मे लोक जीवन अंधा होता जा रहा है सिनेमा की ओर आकर्षित होने से लोकगीत मिटते जा रहे हैं। परंपरा से जो लोक साहित्य चला आ रहा है वह आज क्षीण होता जा रहा है मानव की प्रकृति में बदलाव आ रहा है वह चमक धमक की दुनिया में अपनी मौलिकता को छोड़ रहा है अतः आवश्यक है कि लोक साहित्य को मानव जीवन से जुड़ने के लिए अत्यधिक विस्तृत कर जीवन में आत्मसात किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोक साहित्य डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'संबर' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल पृष्ठ क्रमांक 212
2. लोक साहित्य डॉक्टर राजेश श्रीवास्तव सांभर कैलाश पुस्तक सदन भोपाल पृष्ठ क्रमांक 182
3. यथावत पृष्ठ क्रमांक 298
4. यथावत पृष्ठ क्रमांक 297
5. यथावत पृष्ठ क्रमांक 345
6. लोक साहित्य की भूमिका -डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय।
7. लोक साहित्य की भूमिका - रविंद्र भ्रमर साहित्य सदन कानपुर प्रथम संस्करण 1991
8. आध्यात्मिक लोक कथाएं - ऑनलाइन लेके भारतीय संस्कृति दर्पण।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार